तर्ज--एक भूली याद ने फिर दिल मेरा तड़फा दिया

इक हमारी भूल ने ये दुख का खेल दिखा दिया
सोई थी हम नींद में आके हमे जगा दिया

1--चल के आये धाम़ से हमको जगाने के लिए
क्योंकि निसबत थी हमारी इसलिए अपना लिया

2--आंख भी खुलने न पाई आंख से ओझल हो गये
गुलिस्तां तो है वही माली नया बना दिया

3--आंख वालो को मेरे महबूब की पहचान है
अर्श है मोमिन का दिल वाणी ने ये बतला दिया

Nijanand App